

aglasem.com

कक्षा ११ राजनीति विज्ञान नोट्स

सामाजिक न्याय

Key Notes and Important Questions with Answers

अध्याय 13

सामाजिक न्याय

- न्याय का संबंध हमारे जीवन व सार्वजनिक जीवन से जुड़े नियमों से होता है। जिसके द्वारा सामाजिक लाभ कर्त्तव्यों का बंटवारा किया जाता है।
- प्राचीन भारतीय समाज में न्याय धर्म के साथ जुडा था जिसकी स्थापना राजा का परम कर्त्तव्य था।
- चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशस के अनुसार गलत करने वालों को दण्डित व भले लोगों को पुरस्कृत करके न्याय की स्थापना की जानी चाहिये।
- प्लेटों ने अपनी पुस्तक 'द रिपब्लिक' में न्याय की चर्चा की है।
- सुकरात के अनुसार यदि सभी अन्यायी हो जायेगे तो कोई भी सुरक्षित नहीं रहेगा।
- साधारण शब्दों में हर व्यक्ति को उसका वाजिब हिस्सा देना न्याय है।
- जर्मनी दार्शनिक इमैनुएल के अनुसार हर व्यक्ति का प्राप्य उसकी प्रतिभा या विकास के लिये अवसरों की प्राप्ति है।

सामाजिक न्याय की स्थापना के तीन सिद्धांतः–

- **समान लोगों के प्रति समान बर्तावः** सभी के लिये समान अधिकार तथा भेदभाव की मनाही है। नागरिकों को उनके वर्ग जाति नस्ल या लिंग के आधार पर नहीं बल्कि उनके काम व कार्यकलापों के आधार पर जांचा जाना चाहिये अगर भिन्न जातियों के दो व्यक्ति एक ही काम कर रहें हो तो उन्हें समान पारिश्रमिक मिलना चाहिए।
- **समानुपातिक न्यायः** कुछ परिस्थितियां ऐसी भी हो सकती है जहां समान बर्ताव अन्याय होगा जैसा परीक्षा में बैठने वाले सभी छात्रों को एक जैसे अंक दिये जायें। यह न्याय नहीं हो सकता अतः मेहनत कौशल व संभावित खतरे आदि को ध्यान में रखकर अलग–अलग पारिश्रमिक दिया जाना न्याय संगत होगा।
- **विशेष जरूरतों का विशेष ख्यालः** जब कर्त्तव्यों व पारिश्रमिक का निर्धारण किया जाये तो लोगों की विशेष जरूरतों का ख्याल रखा जाना चाहिए। जो लोग कुछ महत्वपूर्ण संदर्भों मं समान नहीं है उनके साथ भिन्न ढंग से बर्ताव करके उनका ख्याल किया जाना चाहिए।

न्यायपूर्ण बंटवाराः–

– सामाजिक न्याय का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं के न्यायपूर्ण वितरण से भी है। यह वितरण समाज के विभिन्न समूहों और व्यक्तियों के बीच होता है ताकि नागरिकों को जीने का समान धरातल मिल सकें, जैसा भारत में छुआछूत प्रथा का उन्मूलन आरक्षण की व्यवस्था तथा कुछ राज्य सरकारों द्वारा उठाये गये भूमि सुधार जैसे कदम है।

रॉल्स का न्याय सिद्धांतः–

– ''अज्ञानता के आवरण'' द्वारा रॉल्स ने न्याय सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। यदि व्यक्ति को यह अनुमान न हो कि किसी समाज में उसकी क्या स्थिति होगी और उसे समाज को संगठित करने कार्य तथा नीति निर्धारण करने को दिया जाये तो वह अवश्य ही ऐसी सर्वश्रेष्ठ नीति बनायेगा जिसमें 'समाज के प्रत्येक वर्ग को सुविधाएं दी जा सकेगी।

– सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए अमीर गरीब के दरम्यान गहरी खाई को कम करना समाज के सभी लोगों के लिये जीवन की न्यूनतम बुनियादी स्थितियां आवास, शुद्ध पेयजल, न्यूनतम मजदूरी शिक्षा व भोजन मुहैया कराना आवश्यक है।

मुक्त बाजार बनाम राज्य का हस्तक्षेपः–

– मुक्त बाजार, खुली प्रतियोगिता द्वारा योग्य व सक्षम व्यक्तियों को सीधा फायदा पहुंचाना राज्य के हस्तक्षेप के विरोधी है। ऐसे में यह बहस तेज हो जाती है कि क्या अक्षम और सुविधा विहीन वर्गों की जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिये क्योंकि मुक्त बाजार के अनुसार प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते।

भारत में सामाजिक न्याय की स्थापना के लिये उठाये गये कदमः–

– निशुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा
– पंचवर्षीय योजनाएं
– अन्तयोदय योजनाएं
– वंचित वर्गो को आर्थिक सामाजिक सुरक्षा
– मौलिक अधिकारों में प्रावधान
– राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में प्रयास

प्रश्नावली

एक अंकीय प्रश्नः–

1. प्राचीन भारतीय समाज में न्याय संबंधी अवधारण क्या थी?
2. 'द रिपब्लिक' के लेखक का नाम लिखिये।
3. साधारण शब्दों में न्याय का अर्थ समझाइये।
4. समाजिक न्याय को बढ़ावा देने का तरीका क्या हो सकता है?
5. समान लोगों के प्रति समान व्यवहार या बर्ताव से क्या आशय है?
6. न्यूनतम आवश्यकताओं की अवधारणा किस पंचवर्षीय योजना में लाई गई?
7. सरकारी नौकरियों में आरक्षण के प्रस्ताव के विरोध में फूटे आंदोलन का नाम बताइये।
8. सामाजिक न्याय की स्थापना के लिये किस भारतीय दार्शनिक का योगदान सर्वोपरि है?

दो अंकीय प्रश्नः–

1. सामाजिक न्याय ..... व ..... का सामंजस्य है।
2. रॉल्स के अज्ञानता के आवरण का तात्पर्य समझाइये।
3. समानता व सामाजिक न्याय के मध्य संबंध स्पष्ट कीजिये।
4. न्यायपूर्ण वितरण से क्या अभिप्राय है?
5. न्यायपूर्ण समाज की अवधारणा से क्या अपेक्षा की जाती है?
6. संयुक्त राष्ट्र संघ की इकाईयों ने न्यूनतम आवश्यकताओं में किन सुविधाओं की गणना की है?
7. मुक्त बाजार से क्या अभिप्राय है?

चार अंकीय प्रश्नः–

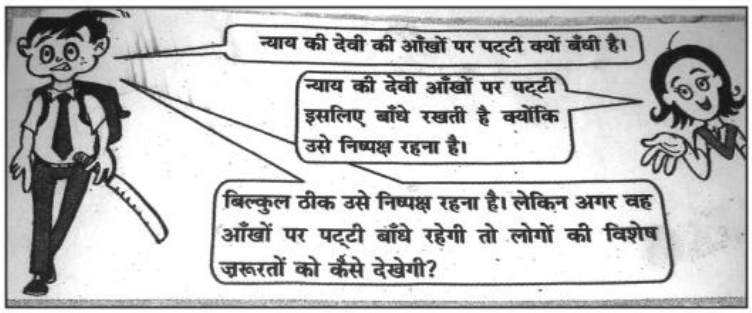
1. न्याय में देरी होना अंधेर होना है। उक्त वाक्य का अर्थ समझाइये।
2. न्याय अपने आप में सम्पूर्ण प्रक्रिया है फिर भारत में सामाजिक न्याय पर विशेष बल क्यों दिया गया है?
3. मुक्त बाजार के पक्ष व विपक्ष में तर्क दीजिये।

4. हर किसी को उसका प्राप्य देने का मतलब समय के साथ कैसे बदला है?

5. न्याय के संबंध में जर्मन दार्शनिक इमनुएल कांट के विचार लिखिये।

पांच अंकीय प्रश्नः–

1. प्रस्तुत कॉर्टून पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।



1) न्याय से क्या तात्पर्य है?

2) विशेष जरूरतों से क्या अभिप्राय है?

3. क्या विशेष जरूरतों का सिद्धांत न्याय के मार्ग में अवरोध पैदा करता है? अपने विचार लिखिये।

छः अंकीय प्रश्नः–

1. सामाजिक न्याय की स्थापना के लिये सरकार द्वारा लागू किये जाने वाले तीन सिद्धांत पर प्रकाश डालिये।

2. राल्स के न्याय सिद्धांत की व्याख्या कीजिये।

3. मुक्त बाजार बनाम राज्य का हस्तक्षेप से क्या तात्पर्य है। विस्तार में समझाइये।

उत्तरमाला

एक अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. प्राचीन भारतीय समाज में न्याय धर्म के साथ जुड़ा था और न्यायोचित सामाजिक व्यवस्था कायम रखना राजा का कर्त्तव्य था।
2. प्लेटों
3. प्रत्येक व्यक्ति को उसका वाजिब हिस्सा देना।
4. पारिश्रमिक या कर्त्तव्यों का वितरण करते समय लोगों की विशेष जरूरतों का ख्याल सिद्धांत सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का तरीका माना जा सकता है।
5. लोगों के साथ वर्ग जाति नस्ल या लिंग के आधार पर भेदभाव न किया जाये। भिन्न जातियों के दो व्यक्ति यदि एक ही काम करते हो चाहे वह पत्थर तोड़ने का काम हो या पिज्ज़ा बांटने का उन्हें समान पारिश्रमिक मिलना चाहिये।
6. 5वीं पंचवर्षीय योजना 1974–1979
7. मण्डल कमीश्न विरोधी आंदोलन 1990
8. डॉ. भीमराव अम्बेडकर

दो अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. व्यक्तिगत अधिकारों, सामाजिक अधिकारों
2. हम खुद को ऐसी परिस्थिति में होने की कल्पना करें जहां हमें यह फैसला लेना है कि समाज को कैसे संगठित किया जाये और साथ ही हमें यह भी पता न हो कि समाज में हमारी जगह क्या होगी तब हम ऐसा निर्णय लेंगे जो सभी के लिये हितकर होगा।
3. दोनों में घनिष्ठ संबंध है सामाजिक न्याय द्वारा समानता तथा समानता द्वारा सामाजिक न्याय की स्थापना होती है।
4. सामाजिक न्याय का संबंध वस्तुओं और सेवाओं के न्यायोचित बंटवारे से है। यह वितरण समाज के विभिन्न समूहों व व्यक्तियों के बीच होता है जिससे उन्हें जीने के लिये समान धरातल मिल सके।
5. न्यायपूर्ण समाज को लोगों के लिये न्यूनतम बुनियादी स्थितियाँ जरूर मुहैया करानी चाहिये ताकि स्वस्थ व सुरक्षित जीवन के साथ समान अवसर के जरिये अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें।

6. भोजन, शुद्ध पानी, आवास, आय व शिक्षा।

7. मुक्त बाजार के समर्थक खुली प्रतिद्वंदिता के पक्षधर है। व्यक्ति को संम्पति अर्जित करने हेतु, मूल्य व मजदूरी के मामले में व्यक्ति की स्वतंत्रता के हामी है।

चार अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. न्याय मे ंदेरी वास्तव में अंधेर ही है क्योंकि यदि पीड़ित व्यक्ति न्याय के लिये लम्बे समय तक दर दर भटकता रहे तो उसका न्याय से विश्वास उठने लगता है कभी कभी तो पीड़ित इंसाफ की उम्मीद लिये दुनिया से ही चला जाता हे।

2. लम्बे समय से चली आ रही जातिगत विभिन्नताओं के कारण न्याय की प्रक्रिया कहीं न कहीं प्रभावित हुई है। इसीलिये सामाजिक ताने बाने को ध्यान में रखकर ही न्याय किया जाना चाहिए।

3. पक्षः बाजार व्यक्ति की जाति धर्म या लिंग की परवाह नहीं करता। बाजार केवल व्यक्ति की योग्यता व कौशल की परवाह करता है।

   विपक्षः मुक्त बाजार ताकतवर धनी व प्रभावशाली लोगों के हित में काम करने को प्रवृत होता है जिसका प्रभाव सुविधा विहीन लोगों के लिये अवसरों से वंचित होना हो सकता है।

4. बदलते समय व परिस्थितियों के कारण व्यक्ति की आावश्यकताओं में भी बदलाव आया है। भूमण्डलीकरण व तकनीक के विस्तार ने व्यक्ति के जीवन में महान परिवर्तन ला दिये हैं इसी के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकताएं भी बढ़ या बदल गई है।

5. इमैनुएल कांट के अनुसर हर व्यक्ति की गरिमा होती है इसलिये हर व्यक्ति का प्राप्य यह होगा कि उन्हें अपनी प्रतिभा के विकास और लक्ष्य की पूर्ति के लिये समान अवसर प्राप्त हो।

पांच अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. हर व्यक्ति को उसका जायज हिस्सा मिलना और अपनी प्रतिभा व विकास के लिये समान अवसर प्राप्त होना।

2. जो लोग कुछ महत्वपूर्ण संदर्भों में समान नहीं है उनके साथ भिन्न ढंग से बर्ताव किया जाये।

.3. नहीं यह न्याय के मार्ग अवरोध नहीं बल्कि न्याय की स्थापना करता है। विशेष जरूरतों या विकलांगता वाले लोगों को कुछ खास मामलों में असमान

व विशेष सहायता के योग्य समझा जा सकता है। बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच का अभाव जाति आधारित सामाजिक भेदभाव से जुड़े होने के कारण भारत के संविधान में सरकारी नौकरियों व शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण की व्यवस्था का प्रावधान है।

छः अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. 1) समान लोगों के बीच समान बर्ताव
   जरूरतमंदों के लिये जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं और अवसरों का प्रावधान।
   2) लाभ तय करते समय विभिन्न प्रयास व कौशलों को मान्यता देना (समानुपातिक न्याय)
   3) विशेष जरूरतों का विशेष ख्यालः जो लोग कुछ महत्वपूर्ण संदर्भों में समान नहीं है उनके साथ भिन्न ढंग से बर्ताव करके उनका ख्याल किया जाना चाहिये।

2. रॉल्स ने न्याय प्राप्ति के लिये 'अज्ञानता के आवरण' का सिद्धान्त दिया है यदि अज्ञानता में रहकर यह निर्णय लिया जाये कि समाज में न्याय कैसा होना चाहिये किस वर्ग के लिये क्या सुविधाएं होनी चाहिए तो व्यक्ति सबसे कमजोर या निचले वर्ग के लिये भी सर्वश्रेष्ठ नीति का चयन करेगा क्योंकि उसे यह ज्ञान नहीं होगा कि इस समाज में उसका स्थान कहां होगा।

3. मुक्त बाजार के समर्थक राज्य के हस्तक्षेप के विरोधी और खुली प्रतिस्पर्धा के पक्षधर है। उनके अनुसार इससे योग्यता और प्रतिभा से लैस लोगों को अच्छा फल मिलेगा जबकि अक्षम लोगों को कम हासिल होगा।